अंतरा-शब्दशक्ति

सोच के सेतु

आलेख संग्रह

वंदना दुबे

सोच के सेतु

(आलेख संग्रह)

वंदना दुबे

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-41-4

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © वंदना दुबे

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Soch ke setu' by 'Vandana Dubey'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

सोच के सेतु

मीठे लोगों से मिल कर मैंने जाना कि,
कड़वे और तीखे लोग अक्सर सच्चे हुआ करते हैं।

हिन्दी साहित्य में 'मधुर वचनों' के पक्ष में दिये गए उदाहरणों की भरमार है।
कहीं गोस्वामी तुलसीदास मीठे वचनों का यह कह कर समर्थन करते हुए दिख जाते हैं कि -
"तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण एक मंत्र है, परिहरि वचन कठोर।।
तो कहीं कबीर यह कहकर मधुर वाणी की पैरवी करते हैं कि -
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करे , आपहुँ सीतल होय।।
और कवि रहीम तो इनसे एक कदम आगे बढ़ कर कड़वे मुख वालों के लिए दंड तक का प्रावधान कर देते हैं -
खीरा सिर तें काटिये, मलियत लोन लगाय ।
रहिमन करुवे मुखन को, चहियत इहै सजाय ।।

इन महान साहित्यकारों के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक भी यही सलाह देते हैं कि किसी मनोरोगी के लिए मधुर वचन औषधि कारक होते हैं। कड़वी सच्चाई शायद उसकी सहन क्षमता से बाहर हो और संभवतः वह कुंठा और अवसाद में घिर कर स्वयं एवं अन्यों को क्षति भी पहुँचा दे ।

अध्ययन एवं अपने जीवन के अनुभव से उन्होंने जो कुछ कहा वह गलत नहीं हो सकता। क्योंकि अधिकांश लोग सच की अपेक्षा मिश्रीयुक्त असत्य बोल कर श्रोता को भ्रम में रखते हैं और सबकी दृष्टि में उच्च स्थान पर आसीन रहते हैं।
किंतु अपने व्यक्तिगत अनुभव ने मुझे इस बात पर विश्वास करने को विवश किया कि सत्य कहने वाला और सत्य सुनने वाला दोनों का साहसी होना बहुत आवश्यक है।इनमें से एक के भी कमजोर पड़ने सत्य प्रतिस्थापित नहीं हो सकता।
तीखे और कड़वे शब्द अवश्य ही मनको चोट पहुँचाते हैं और वक्ता के प्रति श्रोता के हृदय में घृणा उत्पन्न करते हैं जबकि मीठे वचन मलहम का तो कार्य करते ही हैं ;वक्ता के प्रति स्नेह को प्रगाढ़ कर देते हैं।

किंतु अंततः परिणाम में कड़वे वचन सत्य की ताकत लिये वजनदार सिद्ध होते हैं।ऐसा वक्ता न केवल आत्म विश्वास से परिपूर्ण होता है अपितु भविष्य में, वही सबसे बड़ा शुभ चिंतक साबित होता है।

यह पृथक बात है कि प्रारंभ में उसे घृणा और विरोध का सामना करना पड़ता है अंत में वही सबसे विश्वसनीय मित्र , सलाहकार और मार्गदर्शक सिद्ध होता है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं , कि मधुरवक्ता हमारा शुभ चिंतक नहीं।सत्य तो यह है कि -"मधुरभाषी हर किसी का शुभ चिंतक होता है ; दूसरों का भी और स्वयं का भी।"

सर्वप्रथम तो वह स्वयं के शुभ हेतु विशेष चिंतावान रहता है । सबकी दृष्टि में उच्च स्थान पर बने रहने और बैर से बचने के भरसक प्रयास में नकली मधुरता का प्रदर्शन करता है।

वह जहाँ भी जाता है सबको खुश करने वाली बातें करता है। मानव की प्रकृति है कि वह अपने गुणों की प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होता है।मृदुभाषी यह बात अच्छी तरह जानता है। वह आपके समक्ष आपको खुश करने वाली , आपका मन रखने वाली बात करता है और बड़ी ही चतुराई से ; आपके प्रतिद्वंद्वी के समक्ष भी उसका मन रखने और उसे खुश करने वाली बात करता है ।

वास्तव में वह दो विरोधी विचारधाराओं को मिलाने का पुण्यकार्य ही कर रहा होता है और इस प्रकार वह दोनों पक्ष के समक्ष सत्य उद्घाटित न कर के दोनों को भ्रम में रख कर उन्हें चलता ही है। ऐसा करते हुए उसकी चतुराई के दर्शन होते हैं ; सच्चाई के नहीं।

"सच्चाई शाश्वत होती है और चतुराई क्षणिक "

भोले व्यक्ति इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं इसलिए -

"साँचि कहे तो मारन धावे ,झूठे जग पतियाना"

लोग मिठास में लिपटे छल पर विश्वास कर लेते हैं और सच्चे व्यक्ति पर क्रोध करते हैं। जबकि होना तो यह चाहिए , कि बचपन से ही न केवल कटु सत्य कहने,अपितु सत्य सुन सकने की क्षमता का भी विकास होना चाहिए।

मीठे लोगों की आदत न होने और उनसे सचेत न हो पाने के कारण भविष्य में धोखे की संभावना बनी रहती है ।

इसलिए सावधान !

कड़वा बनिये, सच्चा बनिये । कड़वा कहिये, कड़वा सुनिये। और इसके दूरगामी शुभपरिणाम के स्वागत हेतु दोनों भुजाएँ फैलाए तैयार रहिये।

चाटुकारिता : योग्यता पर भारी

चमचागिरी , चापलूसी, चिरौरी आदि शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं। इस गुण से युक्त व्यक्ति का चेहरा सामने आते ही एक अनजाने भय से मन सहम जाता है और उसके इस कृत्य से घृणा होने लगती है।

वह अपने स्वार्थपूर्ण दूषित विचारों से; उसे भी अपने प्रभाव में ले लेता है -जिससे काम निकलवाना हो ;और उसे भी नुकसान पहुँचाता है , जो वास्तव में उस पद , वस्तु या सम्मान का हकदार है जिसे चापलूस हड़पना चाहता है। वह बिना हथियार ही इस काम को अंजाम देने में सफल हो जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि आखिर चापलूसी की आवश्यकता कब , क्यों और किसे पड़ती ??

"जब लालसा की तुलना में क्षमता और योग्यता कम पड़ जाती है तथा किसी योग्य व्यक्ति के सफल होने की शतप्रतिशत संभावना से, कुछ हासिल न हो पाने की आशंका सुदृढ़ हो जाती है तब परिणाम स्वरूप चाटुकारिता के गुण का प्रादुर्भाव होता है।"

फिर चाटुकार द्वारा चिरौरी का अस्त्र अपना कर वास्तविक योग्य को पटकनी दी जाती है।चापलूस , बड़ी सफाई से चालाकी पूर्वक एक-एक पायदान चढता हुआ लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हुए कामयाब भी हो जाता है।

प्रशंसा के लोभी , स्वार्थी , उचितानुचित की पहचान न रखने वाले तथा भ्रष्ट मानसिकता के लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ने में चापलूस सिद्धहस्त होता है।

किंतु मजबूत सिद्धांतवादी,पारखी , कार्यकुशल और स्पष्ट वक्ता से चापलूस कुछ दूरी बना कर ही रहते हैं यद्यपि उन्हें शीशे में ढालने की हर संभव कोशिश जारी रखते है इस उम्मीद से कि जाने कौन सी कोशिश रंग ले आए।
चाटूकार निहायत ही निर्लज्ज किस्म का प्राणी होता है वह दूसरा निशाना उसे बनाता है जो स्वयं अपनी योग्यता से आगे बढ़ रहे हों।
योग्य व्यक्ति देखता ही रह जाता है और चापलूस उसका अधिकार छीन, उसे अंगूठा दिखाकर आगे बढ़ जाता है।
यहाँ कुछ महानुभावों का तर्क आ सकता है कि -
"आखिर अंत में तो जीत योग्यता की ही होतीहै ।"
अंत ???अंत कब???
वर्तमान में तो चाटुकार ही सफलता और उपलब्धि का जश्न मनाता है
योग्य, अयोग्य ही नहीं बल्कि ईर्ष्यालु और झगड़ालु सिद्ध भी हो जाता है साथ ही मानसिकता संत्रास , निराशा और अवसाद से घिर जाता है ।
चाटुकार व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए न केवल स्वयं की सिफारिश करता है; अपितु योग्य व्यक्ति को अन्यों की नजर में गिराने जैसा घृणित और कुत्सित कार्य भी करता है ।
योग्य व्यक्ति खून का घूँट पीकर समय की प्रतीक्षा करता है या फिर अपनी उम्मीदों का गला घोंटकर वहाँ से दूर चला जाता है।
योग्य व्यक्ति -
क्रोध करे
विरोध करे

समय की प्रतीक्षा करे या
हार मान जाए
हर हालत में बाजी तो चापलूस के ही हाथ में होती है तात्कालिक लाभ उसे ही मिलता है।
कभी दृढ़ सिद्धांतवादियों से अपमान और उपेक्षा मिल भी गए तो सफलता के प्रयास में नीम की कड़वी गोली समझकर गटक लेते हैं क्योंकि अंततः जीत तो चाटुकार की ही होगी ।
ऐसी स्थिति में योग्य जनों को कुछ सुझाव अवश्य दिये जा सकते हैं। जैसे -
अपनी योग्यता की रेखा बढ़ते रहें
निराशा - हताशा में न घिरें
ईर्ष्या न करें
शब्दों और व्यवहार में संयम बरतें
सिद्धांत पर अडिग रहें
प्रयास जारी रखें ,
कभी तो सफलता मिलेगी- मुकाम हासिल करने और चाटुकार पर भारी होने में।

बलात्कारों की बढती संख्या : दोषी कौन ?

इन दिनों देश में एक ऐसा वातावरण निर्मित हो रहा है ; जो न केवल लज्जित करने वाला है ,अपितु चिंताजनक भी।अमर्यादा का ऐसा दौर जिसे देख-सुनकर हर कोई स्तब्ध और आक्रोशित है।संभवतः इससे पूर्व इतनी घृणा, इतना आक्रोश,इतना भय और इतनी विवशता महसूस न की गई हो।
कलयुग का जो वर्णन पुराणों में मिलता है ; वह अपने विकराल रूप में सत्य होता दिखाई दे रहा है।परिवर्तन संसार का नियम है; पर यदि ये परिवर्तन आचरण की मलीनता को कंधे पर ढो कर ले आए, तो ऐसे परिवर्तन से तो पिछड़ापन बिल्कुल भी बुरा नहीं।

आए दिन बढ रही बलात्कार की वीभत्स घटनाओं ने सबको झकझोर कर रख दिया। लोगों को कुछ सूझ नहीं रहा ।
यह पैशाचिकता , यह मानसिक विकृति कहाँ जाकर रुकेगी ??
सर्वप्रथम तो शोचनीय यह कि आखिर यह विकृति आई कहाँ से??
इसपर गहराई से मनन करने पर जो मुख्य कारण दृष्टिगोचर होते हैं वे यह कि-

1. आधुनिकता की महत्वाकांक्षा में जाने कब पारंपरिक संस्कार उपेक्षित हो गए।
2. धर्म के स्थान धार्मिकता विराजित हो गई।
3. शिक्षा केवल उच्च पद प्राप्त करने का मकसद बन गई ।

4. एकाकी परिवार की चाह ने सम्मिलित परिवार के सद्गुणों जैसे -सहयोग , प्रेम, अनुशासन ,नियंत्रण और सुरक्षा को अपने हाथों से मसल दिया।
5. इकलौती संतान की हर उचित अनुचित मांग पूरी करना विवशता हो गई।
6. समाज में तेजी से हो रहे परिवर्तनों को आख बंद करके स्वीकार लिया गया।
7. पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण ने सारी मर्यादा और बंधन तोड़ डाले।
8. इंटरनेट और मीडिया ने बंधक बना लिया।
9. व्यावसायीकरण के कारण मीडिया द्वारा आपत्तिजनक दृश्य को भी खुलकर दिखाया जाने लगा।
10. फिल्मों में हिंसा,'अश्लीलता और अपशब्दों की भरमार हो गईं।
11. वातावरण राजनीतिमय हो गया।
    राजनेताओं के गिरते चारित्रिक स्तर, नैतिक पतन एवं अभद्र भाषा का प्रभाव युवाओं पर भी दिखाई देने लगा।
12. राजनैतिक लाभ के लिए युवाओं को मोहरा बनाया जाने लगा।
13. बेरोजगारी और भ्रष्टाचार का साम्राज्य हो गया।
14. न्यायपालिका का लचीलापन निडर होकर अपराध करने में सहायता हुआ।
15. सामाजिक संगठनों में अवसरवादिता एवं वैचारिक मतभेद देखने को मिलने लगे।
16. लोगों के पास समय एवं जागरूकता का अभाव हो गया ।

17.लोग मशीनी हो गए, उनकी संवेदनाएँ मर गई ।

18.प्रकृति, धर्म, संगीत एवं रिश्तों का स्थान इंटरनेट ने ले लिया।

यही वे कारण हैं जो किसी अपराधी को अपराध करने का साहस देते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि वास्तविक अपराधी कौन है? -

1. जिसने अंत में घटना को अंजाम दिया ?

या

2. जिसने अपराध की नींव रख कर घटना को अंजाम देने हेतु अपराधी को न्यौता दिया ??

क्योंकि जो प्रत्यक्ष है वह तो सभी को दिखाई दे रहा है । घटना घटित हुई ,अपराधी सामने है बस लोगों का उबलता हुआ रोश प्रत्यक्ष अपराधी पर बरस पड़ता । कोई यह नहीं देख पाता कि अलग-अलग घटनाओं का समय , स्थान और अंजाम देने वाला व्यक्ति भी पृथक - पृथक है ।सारी घटनाएँ योजनाबद्ध तरीके से एक साथ नहीं घटित हुई।

क्या इसका यह तात्पर्य निकाला जाए कि -

बुराई और अपराध के जीवाणु वातावरण में तैर रहे हैं ?

इसके जवाब के एवज में अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं ।

प्रश्न यह नहीं कि वीभत्स घटना को अंजाम देने वाला अपराधी कौन था?

1. प्रश्न यह नहीं कि अपराध में कितने लोग शामिल थे?
2. प्रश्न यह नहीं कि अपराध की वीभत्सता कितनी थी ?

3. प्रश्न यह नहीं कि आज इस पैशाचिकता का शिकार कौन हुआ?
4. प्रश्न यह नहीं कि अपराधी को कब कैसी और कितनी सजा मिलेगी?
5. प्रश्न यह नहीं कि मीडिया इस घटना को कब और कैसे प्रसारित करेगा??
6. प्रश्न यह नहीं कि पीड़िता को। सरकारी आर्थिक सहायता कितनी और कब मिलेगी??
7. प्रश्न यह नहीं कि पुलिस और प्रशासन को बचाने के लिए' केस' को साक्ष्य मिटाकर कितना हल्का किया जाएगा??
8. प्रश्न यह नहीं कि केस को कितना। विस्तारित किया जाएगा
9. प्रश्न यह भी नहीं कि समाज में पानी के बुलबुले- सी उठी संवेदनाओं की उम्र कितनी होगी??
10. प्रश्न यह भी नहीं कि जनता का उग्र आंदोलन प्रभावी होगा भी या नहीं ? अपितु प्रश्न तो यह है कि -

1. दहेज जैसी कुरीति को किसने प्रोत्साहित किया?
2. दहेज और स्त्री की सुरक्षा के भय से किसने स्त्रियों संख्या के साथ खिलवाड़ किया?
3. वो कौन लोग थे, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए बच्चियों के भ्रूण को गर्भ में ही नष्ट करवा कर, स्त्री पुरुष के अनुपात को असंतुलित करने में बड़ी भूमिका निभाई??

4. प्रकृति के नियम के विरुद्ध, स्त्रियों की संख्या में चिंताजनक गिरावट के हानिकारक परिणामों की कल्पना तक नहीं की गई । क्यों??
5. वो कौन स्वार्थी लोग थे जो पुत्र में ही अपनी वंशवृद्धि एवं समृद्धि की की धारणा पाले हुए थे??
6. पुत्र मोह में कन्याओं की उपेक्षा और अपमान द्वारा उसे कमजोर करने का भरपूर प्रयास हुआ। अब उसके दूरगामी परिणाम दृष्टिगोचर होने पर इतनी उद्विग्नता क्यों ??
7. वो कौन लोग हैं जो स्त्री की अपार योग्यता एवं कुशलता के समक्ष स्वयं को असुरक्षित पाते हैं किन्तु झूठे मद में स्त्रियों को शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना देकर उनका मनोबल गिराते हैं और उनके विकास को बाधित करते हैं??
8. धर्म की आड़ में चलने वाले गोरखधंधो पर लगाम लगाने हेतु जनता एवं सरकार क्यों विवश दिखाई देती है ??
9. बलात्कार जैसी घटनाओं के घट जाने के पश्चात राजनैतिक दल केवल लाठी पीटते हुए एकदूसरे पर छींटाकशी करने में ही अपनी योग्यता एवं जनता का शुभचिंतक होने का भ्रम फैलाते हैं। क्यों???
10. क्यों लोगों की संवेदनाएँ घटना घटित होने के बाद ही जाग्रत् होती हैं।
11. वो जागी हुई संवेदनाएँ शीघ्र ही सुप्त क्यों हो जाती हैं ??
12. भीड़ अपराधी के लिए एक वीभत्स और अमानवीय दंड की गुहार लगाकर एक विकृत सोच का प्रदर्शन करती है,

जबकि वह जानती है कि दंड और भय अपराध रोकने का एकमात्र समाधानमूलक उपाय नहीं है।

13. दंड और भय क्या इस विकृति का समूल नाश कर सकते हैं??

नहीं ।

हमें उन परोक्ष दोषियों तक पहुँच बनाकर उनका मानसिक उपचार करना होगा । परिवार, समाज, एवं राजनीति के साथ ही स्वयं में भी व्यवहारिक एवं मानसिक शुचिता लाने हेतु युद्ध स्तर का प्रयास करना होगा।

शुभचिंतन एवं शुभकर्म द्वारा ही शुभदिशा में परिवर्तन के सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं। फिर न तो किसी बेटी के साथ दुष्कृत्य होगा और ही न उसकी पीड़ा की चीत्कार हमें सुनाई देगी ।

अत: आइये हम आज से ही संकल्प ले कर इस दिशा में आगे बढें।

संवादहीनता

अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य ने भाषा का विकास किया। फिर भाषा के माध्यम से संवाद स्थापित हुए। ये संवाद ही थे जो रामायण तथा महाभारत तक की रचना का आधार बने ।

संवाद के माध्यम से क्रोध, बैर,घृणा, प्रेम और ईर्ष्या की अभिव्यक्ति द्वारा अच्छे - बुरे परिणाम प्राप्त होते हैं।
यूँ तो आँखें एवं शारीरिक भाव भंगिमा सब कुछ व्यक्त कर देती हैं और और मौन की भी अपनी भाषा होती है। मस्तिष्क में संवादों का द्वंद्व सतत चलता रहता है । सुषुप्तावस्था में स्वप्न में भी संवाद क्रियाशील रहते हैं।

मूक पशु पक्षी तथा पेड़ पौधे भाषा के अभाव में भी मौन संवाद द्वारा एक दूसरे के भाव समझ लेते हैं
मनुष्य कुछ समय के लिए मौन रह सकता है किन्तु दीर्घकाल तक बिना संवाद के नहीं रह सकता।
दीर्घकालीन संवादहीनता के कारणों पर यदि चर्चा की जाए निम्न कारण प्रमुखता से सामने आते हैं -

1. आपसी मतभेद
2. सोच की संकीर्णता
3. अहंकार
4. अत्यधिक व्यस्तता
5. अप्रिय स्थिति को टालने हेतु
6. परिस्थिति पर मनन करने हेतु

संवादहीनता किसी के लिए भी उस प्राणघातक धीमे जहर के समान है जिससे आपसी संबंध तो नष्टप्राय हो ही जाते हैं ; सुलह की सब संभावनाएँ दम तोड़ने लगती हैं।

दीर्घकालिक संवादहीनता के अनेक दुष्परिणाम देखने मिलते हैं -

1. सुलह की सब संभावनाएँ समाप्त हो जाना
2. संबंधों में दरार आ जाना
3. व्यर्थ भ्रामक स्थिति उत्पन्न होना
4. निरंकुशता आना
5. पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर अपना अहित कर लेना
6. स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ना
7. कुंठा, निराशा और अवसाद में घिर जाना
8. प्रतिष्ठा में कमी आना
9. रिश्तों में कटुता आना

इस प्रकार दीर्घ संवादहीनता दीमक की तरह सब कुछ खोखला कर देती है। अत: संवाद हीनता को लंबा न खींचते हुए यथासंभव अपने पूर्वाग्रहों को त्याग कर शून्य में सजीवता लाने का प्रयास करना चाहिए । अपनी गलती न होने पर भी ; सहज हो कर क्षमायाचना द्वारा, उस दमघोटू और नकारात्मक वातावरण से बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए। हल्का और स्नेहभरा वातावरण सकारात्मक होने के साथ ही रचनात्मक और स्वास्थ्यवर्धक भी होता है।

स्वस्थ संवाद से स्वस्थ समाज और विकास की संभावनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता।

वंदना दुबे
धार, मध्य प्रदेश।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- वंदना दुबे
जन्म	- 23 दिसम्बर, जबलपुर (म.प्र.)
पति	- श्री राजीव दुबे
माता	- स्व.श्रीमती मनोरमा शुक्ला
पिता	- स्व. श्री लक्ष्मीकांत शुक्ला
शिक्षा	- हिन्दी साहित्य, संगीत एवं अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर एवं बी.एड.
विधा	- गद्य- आलेख एवं कहानी, पद्य- छंदबध्द और छंदमुक्त
कार्यक्षेत्र	- हिन्दी व्याख्याता
संबध्दता	- सचिव- अखिल भारतीय साहित्य परिषद धार। सदस्य- मध्यप्रदेश लेखक संघ धार। आजीवन सदस्य - भोज शोध संस्थान, धार।
प्रकाशन	1. नई रौशन नई पहल, साझा संकलन (प्रजातंत्र का स्तंभ, दौसा, राज.) 2. सृजक सृजन समीक्षा (अंतरा शब्द शक्ति प्रकल्प)। 3. शब्द शिल्पी (साझा संकलन- दैनिक भास्कर, धार)। 4. अपूर्वा (गीत- नवगीत) साझा संकलन। 5. मकरंद (दोहा मुक्तक) साझा संकलन। 6. विचार मंथन, साझा संकलन (तीनो अंतरा शब्द शक्ति, के.बी.एस. प्रकाशन)। 7. पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।
सम्मान	1. होली के रसगुल्ले सम्मान - आनलाइन काव्यपाठ कार्यक्रम में श्रेष्ठ 21 रचनाओं में, मगसम दिल्ली द्वारा। 2. भाषा सारथी सम्मान (मातृभाषा उन्नयन संस्थान दिल्ली)। 3. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान (अंतरा समूह एवं हिन्दी ग्राम)। 4. शब्द शक्ति सम्मान (राष्ट्रीय कवि संगम)। 5. श्रेष्ठ नारी सम्मान (भोज शोध संस्थान धार)
अन्य	- आकाशवाणी में गीतों का प्रसारण। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा जनजाति विभाग भोपाल में आयोजित संगीत समारोह में शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति।
उद्देश्य	- समाज में फैली विद्रूपताओं से उद्वेलित एवं व्यथित मन एक नए परिवर्तन, एक नई रौशनी के लिए सतत् कुछ कर गुजरने की कोशिश में कलम को अस्त्र बनाकर एक नया बिगुल फूँकना चाहती हूँ।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-41-4

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com